थारू जाति का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

डॉ0 कामेश्वर प्रसाद

पी–एच0 डी0 (इतिहास विभाग), बी0आर0ए0 बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

सार–संक्षेप

राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में किसी एक धर्म सम्प्रदाय या जाति का योगदान कह देना सरासर गलत होगा। गुलामी की जंजीरो को तोड़ने में सभी मजहब के लोगो ने कुर्बानियाँ दी हैं क्योंकि फिरंगियों के कूटनीति, क्रूरता, अत्याचार तथा दमन का शिकार सभी भारतवासी हो रहे थे। सभी भारतवासी तन–मन–धन से उन गोरे अंग्रेजो से मुक्ति चाहते थे। उन फिरंगिओ के जाल से थारू भी अछूते नहीं थे। थारू भी उन गोरो से ऊबकर मुक्ति चाहते थे। इसलिए जब तक "चम्पारण के स्वतंत्रता आंदोलन" का जिक्र नहीं किया जाता, तब तक थारू जाति का स्वतंत्रता संग्राम` योगदान का कार्य अधूरा रह जायेगा या देश की स्वतंत्रता आंदोलन ही अधूरा रह जायेगा क्योंकि देश की आजादी की शंखनाद चम्पारण की धरती से ही गुंजायमान हुआ था, जिसका नेतृत्व राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने किया था और उस तुफान में चम्पारण के अनेक, राष्ट्रभक्त वीर सपूतो ने अपनी जान की कुर्बानियाँ दी थी। उन वीर सपूतों में थारूओं का योगदान भी कम सराहनीय नहीं था। अन्ततः थारू जाति का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान की व्याख्या चमपारण के स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़कर किया जा सकता है।

शब्द कुंजी– नील, राजपुर सोहरिया, चउपारन तपा कारवाँ, भितिहरवा, फिरंगी

परिचर्चा

चम्पारण में राष्ट्रीय आंदोलन का मूल कारण जिले की अर्थव्यवस्था थी। जैसा की पी0 सी0 राय चोधरी ने "चम्पारण डिस्ट्रिक्ट गजेटियर" 1960 में वर्णन किया है–

"The Root of the nationalist movement in champaran could clearly be seen in the Economic current in the district. The fertility of the land coupled with the fact that cheap labour was abundartly available early attracted the Europeans to the district."

अंग्रेजों के शासन काल में चम्पारण में नई फसल की खेती आरंभ की गई, जिसे नील कहा जाता था, जो अंततः चम्पारण की दुर्दशा का कारण बना। नील का पौधा पटसन (जुट) के पौधे के समान होता था जिसे सड़ाकर नील की गोटियाँ बनायी जाती थी। इसकी खेती इतनी कष्टप्रद एवं दुरूह थी कि किसान खून के आँसू रोते थे। नीलहो के अत्याचारो से, जुल्मो से सभी चम्पारणवासी त्रस्त थे। चम्पारण के सभी व्यक्तियों के सामूहिक प्रयास का ही प्रतिफल यहाँ का स्वतंत्रता आंदोलन रहा, जो पुरे देश में एक मिशाल कायम कर इतिहास बन गया।

चम्पारण[2] के आंदोलन में थारूओं का योगदान काफी सराहनीय रहा। पूरे थरूहट दो बड़े जमींदारो (तथाकथित राज) के बीच बंटे हुए थे। राजपुर सोहरिया तथा चउपारन तपा का अधिकांश भाग बेतिया राज की अधीन तथा चेंगवान, दोन, जम्हौली तथा राजगीर एवं राम नगर राज के अधीन थे। ये दोनो राजवाड़े अंग्रेजों के डर से उसकी अधीनता स्वीकार कर चुके थे और उसी के इशारे पर अपनी–अपनी राज की काफी उपजाऊ भूमि नीलहों को लीज पर दे दिए थे। लीज के अधीन थरूओं की भी अधिकांश जमीन ले ली गई थी।

इससे थारू भी नीलहो के जुल्म का शिकार होते थे। फलतः इनके भीतर भी विद्रोह की आग जल रही थी किन्तु उचित मार्ग दर्शन के अभाव में ये भी जूल्म की चक्की मे पीस रहे थे। थारू समाज से कुछ उत्साही युवक अंदर ही अंदर एक सशक्त संगठन बनाना चाह रहे थे। इन कर्मठ युवको में श्री धवल खतईत, ग्राम–परसौनी, थाना–रामनगर, बैजनाथ प्रसाद, ग्राम–बेलसण्डी, थाना–गौनाहा, दया राम महतो, ग्राम–छत्रौल, थाना–बगहा (वर्तमान लौकरिया) सबसे पहले आगे आए।

थरूहट की जनता भी नीलहो से दमन से त्रस्त थी। थारूओं की व्यथा को सुनने वाला कोई नहीं था। धवल खतईत, बैजनाथ प्रसाद तथा दयाराम महतो चम्पारण के आन्दोलनकारी नेताओं से मिलने की योजना बना रहे थे। इसी बीच शेख गुलाब एवं शीतल बाबू रामनगर आए हुए थे। जैसे ही इन तीनो थारू युवाओं को शेख गुलाब एवं शीतल बाबू के रामनगर आने की खबर मिली ये मिलने के लिए चल दिए। वही से ये तीनो थारू युवा उनसे मिलने के बाद काफी प्रभावित हुए तथा कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर लिए। फिर उनके मार्ग–दर्शन पर थरूहट के गाँव–गाँव जाकर संगठन बनाने लगे। इन लोगो को भी गाँधीजी के अहिंसात्मक आंदोलन का मार्ग अच्छा लगा। कारण कि निलहो[3] से लोहा लेने का मतलब था सीधे ब्रिटिश सरकार से लोहा लेना और थारूओं के पास सरकार से लड़ने की उतनी शक्ति थी ही नहीं। इसलिए गांधीजी के विचारो से वे काफी प्रभावित हुए।

बगहा के स्वतंत्रता सेनानी बाबू कमलनाथ तिवारी से इन लोगो की मुलाकात बगहा में हुई। श्री तिवारी जी इन थारूओं को अपने साथ मिलाना चाहते थे। यद्यपि श्री तिवारी जी की कांग्रेस के सदस्य थे किन्तु वे "गरम दल" के अनुयायी थे। वे हिंसात्मक आंदोलन पर विश्वास करते थे। श्री तिवारी जी के विचारो से ये सहमत नहीं हुए। ये लोग पुनः गाँवों मे जाकर गांधीजी के अहिंसात्मक आंदोलन के विचारों से अवगत कराते थे। दुखो से आक्रांत सभी युवा एवं बड़े थारू लोग इस जत्थे में सम्मिलत होते गए। इनका कारवाँ बनता गया। सर्वश्री भगवान काजी, केरई, मणिराज काजी धुरौली, ठगई महतो, गोडार, बलि महतो–बेरई, रघुनन्दन पटवारी–नौरंगिया, वंशी मास्अर–विनवलिया, बेंदा महतो तरूअनवा, खूबलाल महतो–महादेवा, भिखारी पटवारी–बनकटवा इत्यादि बहुत से थारू नौजवान गाँव–गाँव से अहिंसात्मक आंदोलन का अलख जगाने के लिए कूद पड़े। धवल खतईत, बैजनाथ प्रसाद तथा दयाराम महतो, शेख गुलाब, शीतल राय तथा राजकुमार शुक्ल के संपर्क में रहते तथा वही ये

अन्य थारू युवाओं का मार्ग–दर्शन करते। ये कारवाँ गाँधी जी को आदर्श मानकर संगठित होता रहा तथा गाँधीजी के दर्शन के लिए ललायित रहते थे।

आखिर मे इन थारू लोगो की इंतजार की घड़ियाँ समाप्त हुई। अप्रैल 1917 ई0 को जब गाँधीजी चम्पारण के भ्रमण में भितिहरवा आश्रम आए तो बड़ी संख्या में थारू नर–नारी भी उनका एक झलक पाने के लिए प्रस्थान किये। गांधीजी से मिलने के पश्चात् वे अपने को धन्य–धन्य समझने लगे। मानो इन्हे साक्षत् भगवान का दर्शन हो गया हो। अब ये समझने लगे कि नीलहों के जुल्म से ये शीघ्र ही निजात पा लेंगे। धवल खतईत, बैजनाथ प्रसाद तथा दया राम महतो गाँधी जी के संपर्क में आने के बाद उनका पक्का भक्त बन गये। अब ये तीनो थारूओं के नेता बन गए। अब इनके अगुआई में थारू[4] जनता वैसा ही करती, जैसा ये तीनो मार्ग–दर्शन करते। उस समय राजकुमार शुक्ल, शेख गुलाब तथा शीतल राय चम्पारण के अन्य हिस्सों का जिम्मा लिए हुए थे, जबकि धवल खतईन बैजनाथ प्रसाद तथा दयाराम महतो को थरूहट का जिला सौपा गया था। ये तीनों थारू नेता अति पिछड़े थरूहट का प्रतिनीधित्व करते थे जहाँ बड़े नेताओ का दौरा नहीं होता था। इसलिए इन थारू नेताओं का नाम इतिहास के पन्नों में अंकित नहीं हो सका हैं तथा ये गुमनाम ही रह गए।

1929 में जब थारूओं ने सुना कि पंडित जवाहरलाल नेहरू बेतिया आ रहे हैं तो सैकड़ों की संख्या में थारू लोग भी उनकी सभा में पहुँचे। यद्यपि नेहरू जी की सभा को असफल करने के लिए अंग्रेज बहुत कोशिश किये। 100–150 किलोमीटर दूर–दराज गाँवो से पैदल ही थारू लोग चलकर नेहरू की सभा को सफल बनाये थे।

बीच–बीच में थारूओ का भी आंदोलन जारी रहा। चम्पारण के अगुआ नेता राजकुमार शुक्ल प्रजापति मिश्र आदि जैसा निर्देश देते, थारू लोग भी वैसा ही करते। इन्हे भी लग रहा था कि इन्हे अंग्रेजों से कब मुक्ति मिलेगी।

8 अगस्त 1942 को "अंग्रेजो भारत छोड़ो" आन्दोलन का प्रस्ताव पारित हुआ। चम्पारण में प्रजापति मिश्र, शीतल राय, शेख गुलाब, राजकुमार शुक्ल इत्यादि नेता इस प्रस्ताव को सफल बनाने के लिए बेतिया में एक यादगार जुलूस निकालने की तैयारी करने लगे। इन नेताओं ने धवल खतईत आदि थारू नेताओं को जिम्मा दिये की थरूहट से भी भारी संख्या में क्रांतिकारी आवें। थारूओं का प्रस्ताव सुनना था की गाँव–गाँव से भारी संख्या में पैदल ही बीहड़ रास्तो से चलकर हजारो थारू बेतिया के एस0 डी0 ओ0 के सामने जुलूस में शामिल हुए। इतना बड़ा जुलूस देखकर अंग्रेज घबड़ाकर गोलियाँ चलाने लगे। इसमें काफी लोग घायल हुए एवं कुछ शहीद भी हुए। कितनों को जेल जाना पड़ा। फिर भी इनकी हिम्मत पस्त नहीं हुई।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि थारूओं ने देश की आजादी में अपना शानदार योगदान दिया। कांग्रेस के नेताओं से कदम से कदम मिलकर अंग्रेजो के खिलाफ लड़ाईया लड़ी। पंडित नेहरू के आह्वान पर थारूओं ने जबरदस्त कुर्बानिया दी तथा अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिए एवं देश आजाद हुआ तो इन्होने आजादी की खुशी जोरदार ढ़ंग से मनाई। थारू धीरे–धीरे राष्ट्र की मुख्य धारा में जुड़ गए तथा वे भारतीय लोकतंत्र में अपनी उपस्थिति भी जोरदार ढ़ंग से करा रहे है। वे अब महत्वपूर्ण पदों पर भी आने लगे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. P.C. Roy Chaudhary, Champaran District Gazetters
2. "राष्ट्रीय आन्दोलन और चम्पारण के स्वतंत्रता सेनानी" अशरफ कादरी, पृष्ठ–129
3. Mr. Mindon Wilson, "History of India"
4. राष्ट्रीय आन्दोलन और चम्पारण के स्वतंत्रता सेनानी– अशरफ कादरी, पृष्ठ संख्या–32
5. डा0 राजेन्द्र प्रसाद, "महात्मा गाँधी और बिहार"
6. Dutta, Dr. K.K., "Freedom movement in Bihar."
7. Mr. Lord Macaulay, Freedom movement in Bihar, Vol. 1.